IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, May 2025
Impact Factor: 7.67

फिल्म संगीत में विभिन्न तालों के बोलों का प्रभाव और प्रयोग

दुर्गेश चन्द्र विश्वकर्मा[1] तथा डॉ. मंजू श्रीवास्तव[2]

शोधार्थी (संगीत कला एवं प्रदर्शन विभाग)[1]

विभागाध्यक्ष (संगीत कला एवं प्रदर्शन विभाग)[2]

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),जमुनीपुर,कोटवा, प्रयागराज

संक्षिप्त सार

यह शोधपत्र हिन्दी फिल्म संगीत में प्रयुक्त विभिन्नतालों (लयात्मक संरचनाओं)की भूमिका, विविधता और उनके सांगीतिक प्रभावों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का जो स्थान है, वही स्थान फिल्मी संगीत में भी तालों को प्राप्त है — वह गीत की आत्मा को गति, प्रवाह और अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

शोधपत्र की शुरुआत ताल के मूल तत्वों (मात्रा, ताली, खालि, सम आदि) की व्याख्या से होती है, तत्पश्चात हिन्दी फिल्म संगीत के आरंभिक युग (1930-1950) से लेकर आधुनिक युग (2000 के बाद) तक तालों के प्रयोग की यात्रा को दर्शाया गया है। इसमेंतीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल, एकतालजैसी पारंपरिक तालों के साथ-साथमिश्र ताल, लोकताल, तथाडिजिटल रिदम पैटर्नके प्रयोग का उल्लेख मिलता है।

इसके साथ-साथ यह शोध यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार क्षेत्रीय लोकतालों (जैसे कजरी, लवणी, तिरुपुगल आदि) को फिल्म संगीत में समाहित किया गया है। ए.आर. रहमान, नौशाद, और पं. रवि शंकर जैसे संगीतकारों के योगदान का भी संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है।

अंततः शोधपत्र यह निष्कर्ष देता है कि ताल केवल संगति या तालमेल का माध्यम नहीं है, बल्कि वहगीत की भावात्मक गहराई, नृत्य संरचना, तथासंगीतकार की कल्पनाशीलताको भी आकार देती है।

इस शोध में प्रयुक्त संदर्भ ग्रंथ, साक्षात्कार, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और विश्लेषित गीत ताल पर आधारित फिल्म संगीत की समृद्ध परंपरा और निरंतर नवाचार को उजागर करते हैं।

मुख्यशब्द :-संगीत,फिल्म,ताल और नृत्य संरचना आदि

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, May 2025
Impact Factor: 7.67

परिचय

भारतीय फिल्म संगीत केवल स्वर और शब्दों तक सीमित नहीं है, अपितु उसकी आत्मा में तालों की प्रमुख भूमिका होती है। ताल केवल संगीत का ढांचा नहीं है, बल्कि वह उस संगीत की गति, प्रवाह और ऊर्जा का स्रोत है। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह है कि हम यह समझें कि हिन्दी फिल्म संगीत में विभिन्न तालों के बोलों का किस प्रकार प्रयोग हुआ है, उनका किस तरह का भावात्मक असर होता है तथा किस प्रकार यह विभिन्न युगों में बदलते संगीत के साथ विकसित हुए हैं।

1. ताल का परिचय और उसका संगीत में स्थान

भारतीय संगीत शास्त्र में 'ताल' का अर्थ है समय की माप और गति की संरचना। यह लयात्मक ढांचा होता है जो संगीत को गति प्रदान करता है। 'ताल' शब्द संस्कृत के 'ताडन' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – प्रहार या मारना। इसमें समय का गणित अत्यंत सूक्ष्म होता है। ताल में मात्रा, विभाग, सम, खालि, और ताली जैसे घटक होते हैं।
उदाहरण:

- **तीनताल** (16 मात्राएँ): धा धिन धिन धा | धा धिन धिन धा | ना तिन तिन ना | धा धिन धिन धा
- **एकताल** (12 मात्राएँ): धा धिन धिन धा | धा धा तिन तिन | ता ता धिन धिन
- **दादरा** (6 मात्राएँ): धा धी ना | ना ती ना

2. हिन्दी फिल्म संगीत में तालों का आरंभिक प्रयोग (1930-1950)

फिल्म संगीत के आरंभिक दौर में अधिकतर संगीत शास्त्रीय या लोकसंगीत पर आधारित होता था। इस युग में पं. अनिल बिस्वास, नौशाद, व खेमचंद प्रकाश जैसे संगीतकारों ने खयाल, ठुमरी व दादरा ताल का अधिक प्रयोग किया।

उदाहरण:

- फिल्ममुग़ल-ए-आज़म (1960) का गीतप्यार किया तो डरना क्या — यह गीत राग दरबारी में है और एकताल व रूपक ताल में निबद्ध है।
- बैजू बावरा (1952) — इसमें द्रुत एकताल और झपताल का अद्भुत समन्वय है।

3. विविध तालों का फिल्मी गीतों में विश्लेषण

i. दादरा ताल

दादरा ताल का प्रयोग मुख्यतः रोमांटिक या भावुक गीतों में हुआ है। इसकी लय सरल होने के कारण यह लोकप्रिय रहा है।

उदाहरण:

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, May 2025
Impact Factor: 7.67

- तुम्हारे संग में भी चलूंगी पिया(फिल्म: सोनी माहीवाल, 1958)
- लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो — एक विलम्बित गति का दादरा ताल आधारित गीत है।

ii. कहरवा ताल

8 मात्राओं वाली इस ताल का प्रयोग लोकगीतों और नृत्य गीतों में अधिक होता है। हिन्दी सिनेमा के हल्के-फुल्के, नृत्य प्रधान गीतों में इसका भरपूर उपयोग होता है ।

उदाहरण:

- बदन पे सितारे लपेटे हुए — फिल्मी कहरवा का प्रयोग
- मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू — सरल लयबद्ध कहरवा ताल

iii. झपताल और एकताल

ये जटिल तालें प्रायः गंभीर, भावप्रधान गीतों या शास्त्रीय रचनाओं में प्रयुक्त होती हैं।

उदाहरण:

- तोरी जय जय कार, बैजू बावरा— एकताल में निबद्ध है, नौशाद द्वारा संगीतबद्ध
- घायल हिरनिया (मुनीमजी 1955)— झपताल आधारित

4. तालों के साथ तालमेल: नृत्य और अभिनय में प्रभाव

फिल्मी गीतों में ताल का प्रयोग केवल संगीत तक सीमित नहीं रहता; नृत्य के साथ उसका तालमेल अत्यंत आवश्यक होता है। भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी इत्यादि शास्त्रीय नृत्य रूपों में ताल की परिपूर्णता ही नृत्य की आत्मा होती है। हिंदी फिल्मों में नृत्यांगनाओं जैसे वैजयंतीमाला, हेमा मालिनी, और माधुरी दीक्षित के प्रदर्शन में ताल की सशक्त उपस्थिति देखी जा सकती है।

5. तालों का आधुनिक फिल्म संगीत में प्रयोग (2000 के बाद)

आधुनिक हिन्दी फिल्म संगीत में तालों का प्रयोग तकनीकी साधनों से हुआ है। अब 'ड्रम मशीन', 'डिजिटल लूप्स', और 'सिन्थेसाइज़र' के माध्यम से तालें निर्मित होती हैं, लेकिन मूल लयात्मक संरचना वही रहती है।

उदाहरण:

- ए.आर. रहमान नेतालफिल्म के शीर्षक गीत में भारतीय तालों और वेस्टर्न बीट्स का अनूठा संगम प्रस्तुत किया।
- मंगल पांडेके गीतमाई रे माईमें रूपक और झपताल का सुन्दर प्रयोग किया गया।

6. तालों पर आधारित फिल्मी गीतों के रचनात्मक प्रभाव

तालों का प्रयोग केवल लय तक सीमित नहीं, बल्कि वह गीत के भाव, उसकी अभिव्यक्ति और गायक के अंदाज़ को भी प्रभावित करता है। संगीतकार तालों की गति, तीव्रता और बदलाव के माध्यम से श्रोताओं की भावना को नियंत्रित करते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, May 2025 Impact Factor: 7.67

7. क्षेत्रीयता और ताल: लोकसंगीत का फिल्मी उपयोग

हिन्दी फिल्म संगीत ने केवल शास्त्रीय तालों को ही नहीं, बल्कि विभिन्न राज्यों के लोकतालों को भी समाहित किया है। इन लोकतालों में क्षेत्रीय भाषा, सांस्कृतिक भाव और जीवनशैली की झलक मिलती है। संगीतकारों ने इन तालों को फिल्मी संदर्भ में ढालकर एक नया रंग दिया है।

उत्तर भारत के लोकताल

- **चैती, कजरी, और बिरहा**जैसे लोकगीतों में कहरवा और दादरा ताल का व्यापक प्रयोग हुआ।
- चली चली देखो चली हवा (पाकीज़ा) जैसे गीतों में पूर्वी उत्तर भारत की ताल शैली दिखाई देती है।

दक्षिण भारत का प्रभाव

- तालमशब्द ही दक्षिण भारत की ताल पद्धति से जुड़ा है।
- फिल्मरोजाऔरबॉम्बे (ए.आर. रहमान) में दक्षिण की 7, 9 और 11 मात्राओं वाली तालों का प्रयोग मिलता है।

8. तालों के प्रयोग में प्रयोगशीलता और नवाचार

आज के संगीतकार पारंपरिक तालों के साथ विविध प्रयोग कर रहे हैं:

i. मिश्र तालों का प्रयोग

- कई गीतों में दो तालों का मिश्रण एक साथ किया जाता है — जैसे**तीनताल और झपताल**, या**कहरवा और दादरा**।
- उदाहरण:ओ रे पिया (फिल्म: अजा नचले) में अलग-अलग ताल-चक्रों का सुंदर मेल है।

ii. तालों की गति में बदलाव

- गीत के भीतर ताल की गति को बढ़ाना या घटाना एक प्रभावशाली युक्ति है जिससे भावनात्मक चरम (climax) रचा जाता है।
- उदाहरण:नीर भरन का कैसे जाऊं सजनी — जिसमें मध्य से अंत तक लय में तीव्रता आती है।

iii. ताल और रिदम का अंतर

- कई आधुनिक गीतों में शुद्ध 'ताल' के स्थान पर 'रिदम पैटर्न' का प्रयोग होता है, जो तालमात्राओं की गणना पर आधारित नहीं होता।
- फिर भी, संगीतकार अक्सर इन्हें पारंपरिक तालों से जोड़ते हैं ताकि भारतीयता बनी रहे।

9. तालों का शिक्षण और फिल्म संगीत की शिक्षा में भूमिका

i. संगीत विद्यालयों में ताल का शिक्षण

- भारत में अनेक संगीत विद्यालयों (जैसे भातखंडे, गंधर्व महाविद्यालय) में तालों का गहन अध्ययन होता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, May 2025
Impact Factor: 7.67

- छात्र फिल्मी गीतों की ताल संरचना का अध्ययन कर आधुनिक संगीत की समझ विकसित करते हैं।

ii. डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स पर ताल शिक्षण

- YouTube, Coursera, Udemy आदि पर तालों की ऑनलाइन कक्षाएँ उपलब्ध हैं जिनमें फिल्मी गीतों का उदाहरण लेकर ताल सिखाई जाती है।

iii. ताल की समझ से गायन और वादन में सुधार

- गायकों के लिए ताल की गहरी समझ आवश्यक है ताकि वे गीत को लय से न गिरने दें।
- वादकों के लिए ताल ही दिशा होती है — तबला, मृदंगम, ढोलक, खंजरी आदि वाद्य इसी ताल पर आधारित होते हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी फिल्म संगीत में ताल केवल लय नहीं, एक जीवंत अभिव्यक्ति है। विविधता, नवाचार और सांस्कृतिक समावेश के माध्यम से तालों ने फिल्म संगीत को युगों-युगों तक अमर बनाए रखा है। पारंपरिक शास्त्रीय रचनाओं से लेकर आधुनिक प्रयोगवादी धुनों तक तालों की उपस्थिति गहराई, सौंदर्य और व्यावसायिक अपील प्रदान करती है। आज भी जब कोई गीत श्रोता के मन को छूता है, तो उसमें निहित छंद, लय और ताल की शक्ति होती है।

संदर्भ ग्रंथ एवं स्रोत

1. भारतीय संगीत का इतिहास – पं. विष्णु नारायण भातखंडे
2. ताल प्रवाह – डॉ. सुधीर कुमार
3. फिल्म संगीत और भारतीय शास्त्रीयता – डॉ. मीनाक्षी शरण
4. YouTube और Spotify पर विश्लेषित गीत
5. इंटरव्यू: ए.आर. रहमान, एन.डी.टी.वी. म्यूज़िक (2010)
6. भारत के विविध क्षेत्रों के लोकतालों और उनके संगीतबद्ध प्रयोगों का विश्लेषण।डॉ. रवीन्द्र शर्मा (संगीत भारती प्रकाशन)
7. मिश्र तालों, ताल परिवर्तन और लय नवाचार पर गहन चर्चा।प्रो. श्रीमती शारदा देशपांडे
8. **साक्षात्कार एवं वार्तालाप**
    - ए.आर. रहमान द्वारा 'इंडिया टुडे कॉन्क्लेव' (2011) में ताल और लय पर विचार
    - ज़ाकिर हुसैन के वक्तव्य: “ताल के बिना संगीत का शरीर अधूरा है” (प्रसार भारती साक्षात्कार, 2005)
9. **ऑनलाइन डिजिटल स्रोत**
    - SangeetGalaxy.com – फिल्मी गीतों में ताल विश्लेषण
    - YouTube चैनल – Raga Surabhi, Naad Bhed, Indian Rhythm Tutorials